Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 4

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

31 मार्च 2016 ई 21 जमादुस्सानी 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपनी फ़जल नाज़िल करे। आमीन

तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्योंकि वह हमेशा के लिए है जिस का ज़माना कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

" ख़लीफा जानशीन (उत्तराधिकारी) को कहते हैं और रसूल का जानशीन वास्तविक अर्थों में वही हो सकता है जो प्रतिकात्मक रूप में रसूल के कमाल अपने अन्दर रखता हो क्योंकि ख़लीफा वास्तव में रसूल का प्रतिरूप होता है और चूंकि किसी इन्सान के लिए सदैव का जीवन नहीं है अत: ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि रसूलों के वजूद को जो दुनिया के वजूदों से सर्वोत्तम तथा सर्वोच्च हैं प्रतिरूप रूप में हमेशा के लिए क़यामत तक रखे। अत: इसी उद्देश्य के लिए ख़िलाफत को चुना ताकि दुनिया कभी और किसी वक्त भी रिसालत की बरकतों से वंचित न रहे।"

(शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 353)

यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़र्माता है

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِي (अल्मुजादिला: 22)

और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला दृढ़ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक चलनी को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजारोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है। लेकिन उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यत: एक नाकामी का भय अपने साथ रखता है, विरोधियों को हँसी और ठट्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता है। और जब वे हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है। तथा ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ हद तक अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं । अर्थात दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता है :

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी कुदरत का हाथ दिखाता है।

(2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी की वफात के बाद कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी शंका में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागे विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के समय में हुआ जब कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक बे वक़्त मौत समझी गई तथा बहुत से ना समझ बादियानशीन (वनवासी) विमुख हो गए और सहाबा भी दु:ख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबुबकर सिद्दीक को खड़ा करके पुन: अपनी शक्ति का नमूना दिखाया। और इस्लाम को मिटते मिटते थाम लिया और उस वचन को पूरा किया जो फ़र्माया था

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِيۡنَهُمُ الَّذِي ارۡتَضٰى لَهُمۡ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا (अन्नूर :56)

अर्थात् भय के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय में हुआ । जबकि हज़रत मूसा मिस्र और किन्आन के मार्ग में बनी इस्राईल को वचन के अनुसार निर्धारित मंज़िल तक पहुँचाने से पहले फ़ौत हो गए । और बनी इस्राईल में उन के मरने से एक बड़ा शोक पड़ गया जैसा कि तौरेत में लिखा है कि बनी इस्राईल इस असमय मृत्यु के दु:ख से और हज़रत मूसा की अचानक जुदाई से चालिस दिन तक रोते रहे। ऐसा ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ घटित हुआ और सलीब की घटना के समय समस्त हवारी तित्तर-बित्तर हो गए और एक उन में से विमुख भी हो गया ।

सो ! हे प्रियो ! जब कि पुरातन से अल्लाह का तरीका यही है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिटा कर दिखला दे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपने पुराने तरीका को छोड़ देवे । इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह हमेशा के लिए है जिस का ज़माना कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरे अस्तित्व के संबंध में नहीं है बल्कि तुम्हारे संबंध में वादा है जैसा कि ख़ुदा फरमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूँगा सो अवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात वह दिन आवे जो हमेशा के वादा का दिन है वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वादा दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कायम रहे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूँ। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे। सो ! तुम ख़ुदा की दूसरी कुदरत के इंतज़ार में एकत्र हो कर दुआ करते रहो।

(रिसाला अल्वयसीयत , रूहानी खज़ायन, भाग 20, पृष्ठ 304-305)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

वक्त एक अज़ीम दौलत

अल्लाह ने इंसान को अनगिनत नेअमतों से सम्मानित किया है उनमें एक महान नेअमत वक्त है।

निस्संदेह यह एक ऐसी दौलत है। जिस से सही रंग में लाभ उठाया जाए तो मनुष्य विकास की बुलंदियों को छू सकता है लेकिन इसकी कदर ना करने वाले , वक्त बरबाद करने वाले न केवल अपने अंदर कोई बदलाव नहीं पैदा करते हैं बल्कि उल्टा समाज पर बोझ बन जाते हैं।

दुर्भाग्य से हमारे समाज में वक्त की बरबादी बहुत क्रूरता से की जा रही है। इसका एक छूटा सा उदाहरण यह है कि हम में से अधिकतर लोग टीवी के सामने बैठे दो तीन घंटे रिमोट चैनल घुमाते रहते हैं एक से सौ और सौ से एक तक न जाने कितनी बार हमारी उंगलियां क्लिक करती हैं। हम बेख़याली में पल भर के लिए एक चैनल पर रुकते हैं। शायद कोई दिलचस्प चीज़ नज़र आए इस आरज़ू में हमें पता चलता है कि तीन घंटे गुज़र गए। लम्हा भर के लिए सोचिए तीन घंटे गुज़र गए। हमारे अंदर एक दर्दनाक भावना जन्म देती है कि हम ने तीन घंटे बेकार बरबाद कर दिए। हम में से अधिकांश के रोज़ाना कई घंटे इसी तरह ब्लैक होल में चले जाते हैं और फिर कभी वापस नहीं आते। क्या हम ने कभी सोचा है कि हम इन में कितने रचनात्मक काम कर सकते थे।

यह सही है कि एक दिन में सिर्फ 24 घंटे ही होते हैं लेकिन ऐसा क्यों होता है कि कुछ लोग एक ही दिन में ढेर सारे काम पूरा कर लेते हैं जबकि दूसरे लोग अपनी सारी कोशिशों के बावजूद भी कुछ नहीं कर पाते।

सबसे पहले हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि हम हर काम करने के लिए वक्त नहीं निकाल सकते। कई बार हम किसी की सफलता को देखकर कहते हैं कि उस ने बहुत मेहनत की होगी हालांकि वे कड़ी मेहनत का नतीजा नहीं बल्कि कुछ भाग्यशाली लोग हर दिन एक ही वक्त पर इस काम को नियमित रूप से कुछ वक्त करने से इस कामयाबी पर पहुंचते हैं। अगर आप भी अपनी कामयाबी की इमारत में हर रोज़ अपने हिस्से की ईंट लगाते जायें तो देखते ही देखते यह इमारत पूरी हो जाएगी। क्योंकि एक उद्देश्य के लिए उठाए जाने वाले 20 कदम 20 उद्देश्यों के लिए उठाए गए 20 क़दमों पर भारी होते हैं।

अधिकतर लोग शिकवा करते हैं कि मेरे पास वक्त बहुत कम होता है इतने काम हैं वक्त सिरे से ही नहीं होता हालांकि वक्त तो मिलता है लेकिन कभी कभी हमारी प्राथमिकताएं गलत हो जाती हैं। कई बार हम दोस्तों मेहमानों के साथ गप शप लगाते हैं जिस में एक घंटा लग जाता है। क्या हमने कभी सोचा कि अनावश्यक रूप से हर रोज़ एक घंटा गपें हाँकने से सप्ताह में सात घंटे गप शप की भेंट चढ़ जाते हैं। अगर सप्ताह में यही 7 घंटे कोई किताब पढ़ने में खर्च किए जाएं या किसी और नेक उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाएँ तो इस में बेकारी का ज़ंग नहीं लगेगा और ख़ुदा तआला भी ख़ुश हो जाएगा।

यह तो सिर्फ एक घंटे की बात है बाकी कामों में भी प्राथमिकताओं के सही विकल्प के बाद आप क्या कुछ कर सकते हैं इसके जवाब में एक लंबी सूची तैयार हो सकती है। प्राय घर और काम मानव जीवन के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं और लगभग हर दूसरा व्यक्ति इन दोनों में संतुलन बनाए नहीं रख सकता। दफ़्तर के वक्त को बचाते बचाते आप अपने पारिवारिक जीवन की अनदेखी कर जाते हैं तो यह एक स्तर पर सफलता आपको बाकी चीजों में बुरी तरह विफल साबित कर देगी। नए करोबारी संस्कृति में हर आदमी इतना व्यस्त है कि उसके पास अपने घर के लिए वक्त नहीं है। कामयाबी की पहली सीढ़ी यह है कि घर और काम में संतुलन स्थापित किया जाए। घर में रहकर दफतर सिर पर सवार रखने और दफतर की प्राथमिकताओं को घर पर प्रथम करने से अप्रिय परिणामों के सिवा और कुछ नहीं मिलता। काम और घर दोनों में से किसी एक के अधिकारों के हनन से आप के अंदर शर्मिंदगी का एहसास बना रहता है। इसलिए जरूरी है कि उपयोग से पहले वक्त का निर्धारण करने के बाद उचित उपयोग किया जाए और हर महीने की शुरुआत पर अपने काम की योजना करें कि आप के पास कुल कितना वक्त है और आप इसे कहां खर्च करना चाहते हैं। अगर आप योजना नहीं करेंगे तो कुछ समझ नहीं आएगा कि आपका सारा वक्त कहां खर्च हो रहा है। इसलिए यह आकलन की जरूरत है कि दफतर, घर, आप की अपनी ज़ात, बच्चे, मित्र, प्रिय संबंधी, और मनोरंजन में आप के लिए कौन सी चीज़ कितनी महत्त्वपूर्ण है? सबको महत्त्व के आधार पर नंबर दें। जिन बातों को आप महत्त्वपूर्ण समझते हैं उन्हें आप कितना वक्त दे रहे हैं ? भविष्य में आप उन्हें कितना वक्त देने के इच्छुक हैं ? यह भी समीक्षा करें कि आप अपना कितना वक्त अनावश्यक कामों में बिताते हैं। जिन्हें आप अपने लिए महत्त्वपूर्ण नहीं समझते । दूसरों को आप अपनी प्राथमिकताओं से अच्छी तरह अवगत कर दीजिए । वक्त को 24 घंटे से अधिक करना तो आप के लिए संभव नहीं है आप के पास एक ही रास्ता बचता है कि वक्त अकल्मंदी से उपयोग करें। इसलिए तब तक कोई काम न कीजिए जब तक यह करने के लिए आप के पास उचित कारण न हो।

सफलता के लिए मना करने का हौसला भी ज़रूरी बात है। जब आप समझते हैं कि कोई मसरूफियत आप के वक्त की क्षमता, काम करने की इच्छा शक्ति पर बोझ है तो ऐसा करने से इनकार कर देना सफलता की तरफ मार्गदर्शन करता है।

वक्त की कमी की शिकायत के पीछे एक और बड़ा कारण कामों को स्थगित करते जाना है। टाल मटोल से काम लेना कई बार लोगों का पसंदीदा काम बन जाता है। कुछ लोगों के विचार में इस टाल मटोल का कारण लगन की कमी है। काम के ग़ैर दिलचस्प या कम महत्त्वपूर्ण होना भी एक कारण हो सकता है और कभी इसका कारण यह होता है कि काम पूरा करने के लिए आपके पास आवश्यक कौशल नहीं होता। हालांकि इस टाल मटोल की बड़ी वजह यह डर भी है कि काम बहुत बड़ा है या इस काम के लिए जितने संसाधन दौलत, वक्त, श्रम और क्षमता की जरूरत है वह इस वक्त मेरे पास मौजूद नहीं। कामयाबी को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने कार्यों को ऐसे छोटे भागों में विभाजित कर दें जिस से दिमाग़ को कुछ परिचय हो ताकि दिमाग़ उसे फौरन स्वीकार कर ले। टाल मटोल की सबसे बड़ी वजह लक्ष्यों को ऐसे छोटे कार्यों में विभाजित करने में विफलता है, जो आपके लिए आसान सरल और संभव होते हैं। जब आप इन कार्यों को विभाजित करते हैं तो अपने आप स्पष्ट हो जाता है कि अब इन्हें किए बिना गुज़ारा नहीं।

यह एक तथ्य है कि अधूरा छोड़ा हुआ काम आप की ताकतों का दुश्मन है जब भी इस विषय में सोचते हैं तो परेशान हो जाते हैं। इस विचार से ही आपके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है। आप जानते हैं कि यह काम करना चाहिए "लेकिन ख़ुदा जाने इस के लिए मुझे वक्त कब मिलेगा " कहने के अलावा आप कुछ नहीं कर पाते।

यह अधूरा काम स्थायी तौर पर आप की ऊर्जा बर्बाद करता रहता है। आप विचार करें कि अपने निजी जीवन में कौन से काम अधूरे पड़े हैं। हो सकता है आप किसी अच्छे काम या व्यवहार को स्वीकार करना चाहते हैं, किसी को माफ करना चाहते हैं, किसी से दिली भावनाओं को व्यक्त करना चाहते हैं, किसी से अपने किए पर माफी मांगना चाहते हों, कोई सच बोलना चाहते हों, कोई अनदेखे किए गए फैसले करना चाहते हैं, अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं। अगर उनमें से कुछ काम आप अधूरे छोड़ चुके हों और उन्हीं विषय में सोच कर आप अपनी ऊर्जा को कम होता हुआ महसूस करते हैं तो आज ही इन अधूरे कामों को पूरा करने की योजना करें। आप देखेंगे कि अधूरे कामों को पूरा करने में इतना वक्त या ताकत और क्षमता खर्च नहीं होती जितनी उन्हें न करने के बहाने ढूंढने और उन बहानों की रक्षा करने में हो जाती है। आप आज करने वाले ज़रूरी काम को यदि आज नहीं करेंगे तो उसे कल करने के लिए डबल और परसों करते हुए तीन गुना ज्यादा वक्त, क्षमता और शक्ति की आवश्यकता होगी।

हम ख़ुदा की कृपा से वह भाग्यशाली जमाअत हैं जिन्हें ऐसा महान इमाम नसीब हुआ है जिसे ख़ुदा ने यह ख़बर दी कि वे बुज़ुर्ग मसीह है जिसका वक्त बर्बाद नहीं किया जाएगा। अत: इस में हमारे लिए एक बड़ी चेतावनी है कि हमें वक्त जैसी महान नेअमत को महत्त्व देते हुए इससे भरपूर लाभ उठाना चाहिए और कोई अहमदी व्यक्ति ऐसा न हो जिसका वक्त किसी भी लिहाज़ से बर्बाद हो रहा हो । वक्त बर्बाद करना और बेकार रहना बहुत बड़ा रोग है जिस से बचने की हमेशा कोशिश करनी चाहिए सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद इस बारे में फ़रमाते हैं:

"हमारी जमाअत के लोग बेकार न रहें याद रखो जिस देश में बेकारी का रोग हो वह न दुनिया में इज़्ज़त प्राप्त करती है और न धर्म में सम्मान प्राप्त कर सकती है। बेकारी एक महामारी की तरह होता है जिस तरह एक प्लेग का रोगी सारे ग्रामीणों को प्लेग से ग्रस्त कर देता है, जिस तरह एक हैज़ा का मरीज़ सारे गांव वालों को हैज़ा से ग्रस्त कर देता है। इसी तरह तुम एक बेकार को किसी गांव में छोड़ दो तो वह सारे युवाओं को बेकार बनाना शुरू कर देगा।

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

दुनिया में बहुत सी बातें बहुत से लोग व्यर्थ और बिना कारण के करते हैं। कुछ लोग मज़ाक में किसी को कोई लग़्व (व्यर्थ) बात कह देते हैं जिससे झगड़े और समस्याएं पैदा होती हैं। कई बार ऐसी बातें मज्लिसों में की जाती हैं जो व्यर्थ होती हैं बात केवल बात के लिए की जाती है और कई बार ऐसी व्यंग्यात्मक बातें भी हो जाती हैं जिससे दूसरे को चोट भी पहुंचती है या ऐसी व्यर्थ बातें होती हैं जो किसी को भी लाभ नहीं पहुंचा रही होती। केवल समय की बर्बादी है। लग़्व के शाब्दिक अर्थ फ़जूल और व्यर्थ बातचीत के हैं या बिना सोचे समझे बोलने के हैं। नाकारा और बेवकूफों वाली बातें करने के हैं। कुरआन में ख़ुदा तआला ने मोमिनों को ऐसी बातों से रोका है जो लग़्व हैं।

एक मोमिन को अपने चाल-चलन से अपने व्यवहार से दूसरों के काम आने से दूसरों का उपकार करने से अपनी कदर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

कुछ लोग मामूली कुरबानी करके समझते हैं कि हम ने बहुत कुछ किया है या कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिना कुरबानी के अपने विचारों में कुरबानी करने वाले बन जाते हैं या दूसरों पर रहम करने वाले बन जाते हैं एक मोमिन को वास्तविक तौर पर उपकार करने वाले का शुक्र करने वाला होना चाहिए।

प्रत्येक मुब्बलिग़ को चाहिए कि वह भूगोल, तारीख़ हिसाब, चिकित्सा, बातचीत के आदाब, मज्लिस के शिष्टाचार आदि के बारे में इतना ज्ञान तो जरूर रखता हो जितनी शरीफों की मज्लिस में शामिल होने के लिए ज़रूरी है और यह मुश्किल कोई काम नहीं है थोड़ी सी मेहनत से यह बात हासिल हो सकती है। इसके लिए हर ज्ञान की प्रारंभिक किताबें पढ़ लेनी चाहिए। वर्तमान समय की हालत से परिचय और जिस मज्लिस में जाएँ उस के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर के जाएँ ।

हम अहमदी जिनका यह दावा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हमें सही इस्लामी शिक्षा के अनुसार जीवन गुज़ारना है तो ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हर हालत में अल्लाह तआला की तरफ ही देखना है उसी से संबंध स्थापित करना है।

तरक्की का यही रास्ता है कि आदमी अपने आप को ख़ुदा के हाथ में दे दे और जिस तरफ वह ले जाना चाहे इस ओर चलता जाए।

इसलिए जो लोग नमाज़ों के हक़ अदा नहीं करते। उन्हें अपनी समीक्षा लेनी चाहिए। जो लोग धर्म को दुनिया पर प्रथम करने के नियम को पूरा नहीं करते उन्हें अपनी समीक्षा करनी चाहिए। जो लोग यहाँ आए तो अहमदियत के कारण हैं लेकिन यहां आकर भूल गए हैं कि अहमदियत की वजह से ही उन्हें यहां रहने की नागरिकता का अधिकार मिला है और इसलिए उन्हें अधिक से अधिक जमाअत की सेवा के लिए आगे आना चाहिए लेकिन वे यह भूल जाते हैं और कई बार आपत्ति शुरू कर देते हैं। ऐसे लोग न अच्छे आबिद हैं न वफादार हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई विभिन्न शिक्षाप्रद घटनाओं का हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की रिवायतों के हवाले से वर्णन और जमाअत को नसीहतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 26 फरवरी 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

दुनिया में बहुत सी बातें बहुत से लोग व्यर्थ और बिना कारण के करते हैं। कुछ लोग मज़ाक में किसी को कोई लग़्व (व्यर्थ) बात कह देते हैं जिससे झगड़े और समस्याएं पैदा होती हैं। कई बार ऐसी बातें मज्लिसों में की जाती हैं जो व्यर्थ होती हैं बात केवल बात के लिए की जाती है और कई बार ऐसी व्यंग्यात्मक बातें भी हो जाती हैं जिससे दूसरे को चोट भी पहुंचती है या ऐसी व्यर्थ बातें होती हैं जो किसी को भी लाभ नहीं पहुंचा रही होती। केवल समय की बर्बादी है।

लग़्व के शाब्दिक अर्थ फ़जूल और व्यर्थ बातचीत के हैं या बिना सोचे समझे बोलने के हैं। नाकारा और बेवकूफों वाली बातें करने के हैं। कुरआन में ख़ुदा तआला ने मोमिनों को ऐसी बातों से रोका है जो लग़्व हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक जगह अल्लाह के हुकुम की व्याख्या करते हुए एक मिसाल बयान फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे। फरमाया कि

"وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا

(अल्फुर्कान 73)

मोमिन की एक निशानी बताई गई है कि जब वह कोई लग़्व देखता है तो उसके पास से गुज़र जाता है लेकिन अब कहते हैं कि बहुत अफसोस की बात है। उदाहरण तो यह औरतों की दी है कि औरत हमेशा लग़्व बात की ओर आकर्षित होती है यद्यपि आजकल मर्दों का भी यह हाल है। जैसे बेवजह दूसरे से पूछती रहती हैं कि यह कपड़ा कितने का लिया है। यह छोटी-छोटी बातें हैं। यह भी लग़्व ही हैं। यह ज़ेवर कहाँ से बनवाया है ये बातें ऐसी हैं जो केवल दुनियादारी की बातें हैं जिन में कोई फायदा नहीं और कई बार साथ बैठी औरतों पर इसके बुरे प्रभाव भी हो रहे होते हैं। आप फरमाते हैं कि जब तक उसकी सारी हिस्ट्री पता न कर ले औरत को चैन नहीं आता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक औरत ने अंगूठी बनवाई लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान न दिया। सोने की बड़ी ख़ूबसूरत अंगूठी थी। उसने तंग आकर अपने घर को आग लगा दी। लोगों ने पूछा कुछ बचा भी? उस ने कहा सिवाय इस अंगूठी के कुछ नहीं बचा। एक औरत ने पूछा कि बहन तुम ने यह अंगूठी कब बनवाई थी यह तो बहुत सुंदर है तो वह कहने लगी अगर यही बात तुम मुझ से पहले पूछ लेती तो मेरा घर क्यों जलता। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद भी फरमा रहे हैं कि तो यह आदत केवल कुछ औरतों तक नहीं है बल्कि मर्दों में भी है बेवजह के सवाल जवाब भी कई बार कर लेते हैं। अस्सलामो अलैकुम के बाद पूछने लग जाते हैं कि कहां से आए हो? कहां जाओगे।? आमदनी क्या है? भला दूसरे को इस मामले में पड़ने की क्या ज़रूरत है। फिर आप पश्चिमी क़ौमों का उदाहरण देते हैं कि अंग्रेज़ों में यह कभी नहीं होता वह एक दूसरे से पूछें कि तू कहां काम करता है।? शिक्षा कितनी है? तनख्वाह क्या मिलती है? वह कुरेदने का ख्याल नहीं करते।

(उद्धरित मस्तूरात से ख़िताब अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 397)

इसलिए लग़्व ही ऐसी चीज़ नहीं जो दूसरे को नुकसान पहुंचाने वाली हो बल्कि हर व्यर्थ बात लग़्व बात है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह इस को यूं भी स्पष्ट करते हैं

कि "ऐसा काम सादिर हो जिस से कोई विशेष हर्ज और नुकसान नहीं पहुंचता।" (उद्धरित इस्लामी उसूल की फलासफी रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 349) यानी वह बातें लग़्व हैं जिन से कोई विशेष हर्ज और नुकसान नहीं पहुंचता। यह इसका मतलब है।

तो मोमिन के लिए यह शर्त है कि इस की बातचीत हमेशा सार्थक हो और हर प्रकार की लग़्व से परहेज़ हो, लेकिन हम समीक्षा करें तो देखते हैं बहुत सारे लोग बेवजह कई बातें कर रहे होते हैं।

अभी कुछ और शिक्षाप्रद उदाहरण जो विभिन्न स्थानों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन किए हैं और जिन्हें हज़रत मुस्लेह मौऊद ने पेश फरमाया है वह प्रस्तुत करता हूँ।

आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक लतीफा सुनाया करते थे कि कोई ..(हरिजन) लाहौर के पास से एक बार गुज़रा। गांव का रहने वाला था। बोझ उठाने के काम करता था या गंद उठाने का काम करता था। उसने देखा कि शहर में कोहराम मच रहा है। बड़ा शोर मचा हुआ है। हिंदू मुसलमान मर्द औरत सब रो रहे हैं। उसने किसी से इस का कारण पूछा तो उसे बताया गया कि महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं यूं तो सिखों की हुकूमत बहुत बदनाम है। उस ज़माने में कुछ ऐसे भी राजे आए थे जो बड़े बदनाम थे मगर इसमें शक नहीं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी मैंने कई बार सुना है कि महाराजा रणजीत सिंह के ज़माने में शांति स्थापित हो गई थी और उसने ख़राबियों को बहुत हद तक दूर कर दिया था। मुसलमानों पर सिखों के ज़ुल्म की जो घटनाओं का वर्णन किया जाता है वह दूसरे ज़माने के हैं जब देश की हुकूमत छोटे टुकड़ों में बंटी हुई थी, लूट हो रही थी और राज्य में उपद्रव फैला हुआ था। महाराजा रणजीत सिंह की कोशिश हमेशा यही रहती थी कि शांति हो और मुसलमानों के साथ भी एक हद तक अच्छा व्यवहार करते थे। (आप इस का और अधिक विवरण करते हैं कि) उनके वज़ीर भी मुसलमान थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाप यानी हमारे दादा भी उनके जरनेलों में से थे और कई मुसलमान भी बड़े बड़े -बड़े पदों पर थे। इसलिए इस शांति को देखते हुए जो उनकी वजह से देश को हासिल हुई थी और उस दंगे को याद करके जो देश में पहले पाया जाता था। उनकी मौत का सब को सदमा था और लोग रो रहे थे। ..(हरिजन) ने इस कोहराम का कारण खोजा तो किसी ने उसे बताया कि महाराजा रणजीत सिंह मर गए हैं। वह बड़े आश्चर्य से उस आदमी का मुंह देखने लगा और पूछने लगा कि लोग उनकी वफात पर इतने बेताब क्यों हैं मेरे बाप जैसे लोग मर गए तो महाराजा रणजीत सिंह किस गिनती में हैं। यह लतीफा बयान करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि जिसे किसी चीज़ की कदर होती है वही उसके पास बड़ी होती है। इस ..(हरिजन) का बाप उस से अच्छा व्यवहार करता था। इसलिए वह उसे प्यारा था और महाराजा रणजीत सिंह का अच्छा व्यवहार गो लाखों से हो मगर चूंकि वह लाखों में से न था, न उसकी नज़र इतनी व्यापक थी कि वह समझता कि देश का लाभ और शांति बड़ी चीज़ है। व्यक्तिगत लाभ के इन के मुकाबले में कोई सच्चाई नहीं है। इसलिए उसका यही विचार था कि असली चीज़ जो कद्र की है मेरा बाप था जिसकी मुझे कदर करनी चाहिए जब वह मर गया तो फिर महाराजा रणजीत सिंह मर गया तो क्या हुआ।

(उद्धरित अल्फज़ल 6 जून 1952ई जिल्द 24 नम्बर 135 पृष्ठ 5)

तो दुनिया में अपनी आवश्यकता के महत्त्व के कारण कई छोटी चीज़ें भी बड़ी होती हैं और कई बड़ी चीज़ें चीज़ों के कम ज्ञान के कारण आदमी उपेक्षा कर देता है। बच्चे को अगर कीमती से कीमती हीरा भी दे दिया जाए तो वह उसकी कदर क्या करेगा।

तो एक मोमिन को अपने चाल-चलन से अपने व्यवहार से दूसरों के काम आने से दूसरों का उपकार करने से अपनी कदर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। इस की तरफ केवल सीमित कदर न हो कि उसके क़रीबी ही न केवल इस पर रोने वाले हों बल्कि जहां वह रहता है जिस समाज में रहता है वहां उसकी कदर स्थापित हो। प्रत्येक का अपना-अपना क्षेत्र है। इसी सीमा में किसी अहमदी का परिचय और अच्छा परिचय सिर्फ उसकी ज़ात तक सीमित नहीं रहता या उसे लाभ नहीं पहुंचाता बल्कि जमाअत की नेकनामी का कारण होता है और इस प्रकार तब्लीग़ के रास्ते भी खुलते हैं। दुनिया को पता चलता है। अगर एक अहमदी अपना प्रभाव डालने वाला हो तो दुनिया को पता चलेगा कि इस्लाम की सच्चाई क्या है और दुनिया की शांति और सुरक्षा के लिए इस समय इस्लाम की शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है जो वास्तविक शांति पैदा कर सकती है। इसलिए दुनिया का जो ज्ञान न होना है या ज्ञान का न होना जो है वह ज्ञान दिलाने के लिए हम में से हर एक को अपने-अपने दायरे में कोशिश करनी चाहिए।

कुछ लोग मामूली कुरबानी करके समझते हैं कि हम ने बहुत कुछ किया है या कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिना कुरबानी के अपने विचारों में कुरबानी करने वाले बन जाते हैं या दूसरों पर रहम करने वाले बन जाते हैं। ऐसे लोगों के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक घटना का वर्णन किया करते थे कि "एक आदमी ने किसी आदमी की दावत की और अपनी ताकत के अनुसार उस की सेवा में कोई कमी नहीं रखी। जब मेहमान जाने लगा तो इस से घर वाला माफी मांगने लगा था कि मेरी बीवी बीमार थी कुछ और भी मजबूरियां बतलाई। इसलिए मैं आप की पूरी तरह सेवा नहीं कर सका। उम्मीद है कि आप माफ करेंगे, क्षमा करेंगे। यह सुनकर मेहमान कहने लगा कि मैं जानता हूँ तुम किस उद्देश्य से कह रहे हो तुम्हारी इच्छा यह है कि मैं तुम्हारी प्रशंसा करूं और तुम्हारा एहसान मानों। अब यह मेहमान का विचार है लेकिन मेहमान साहिब कहने लगे तुम मुझ से यह उम्मीद न रखो बल्कि तुम्हें मेरा एहसान मानना चाहिए। मेज़बान ने कहा मेरी हरग़िज़ यह इच्छा नहीं है कि आप के ऊपर कोई एहसान जताऊं मैं वास्तव में शर्मसार हूं कि पूरी तरह से आप की सेवा नहीं कर सका। यदि आप का मुझ पर कोई एहसान है तो मुझे बता दें। मैं इसका भी शुक्र कर देता हूँ। इस पर मेहमान ने कहा कि चाहे तुम कुछ कहो मैं तुम्हारे दिल की इच्छा को ख़ूब समझता हूँ।(यानी दिलों का हाल भी जानने लगे मेहमान यह कहने लगा) लेकिन याद रखो कि तुम ने मुझे खाना ही खिलाया (इस से ज़्यादा और तुम ने क्या किया है।?) मेरा तुम पर बहुत बड़ा एहसान है। तुम ज़रा अपने कमरे को देखो। (यह कमरा जहां मुझे बिठाया हुआ है, ड्राइंग रूम, इस में कई हज़ार का सामान पड़ा हुआ है। जब तुम मेरे लिए खाना लेने अंदर गए थे मैं चाहता तो माचिस जलाकर यह सब कुछ जला देता। तुम ही बताओ कि एक पैसे का भी सामान बाकी रह जाता।? मगर मैंने ऐसा नहीं किया। मेहमान कहने लगा क्या मेरा तुम पर यह एहसान कम है। यह सुनकर घर वाले ने कहा कि वास्तव में तुम ने बहुत बड़ा एहसान किया है। मैं उसका भी शुक्र करता हूँ कि आप ने मेरा घर नहीं जलाया। तो देख लो एक इंसान ऐसा भी होता है कि बजाय मोहसिन को पहचानने और शुक्र करने के यह समझता है कि मैं एहसान कर रहा हूँ।"

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 13 पृष्ठ 592)

तो एक मोमिन को वास्तविक रूप में एहसान करने वाले का आभारी होना चाहिए न कि एहसान फ़रामोश।

एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद ने मुरब्बियान को भी नसीहत फरमाई है और एक उदाहरण दिया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन किया करते थे। आप फरमाते हैं कि "हज़रत साहिब (यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) फरमाया करते थे कि एक बादशाह था जो किसी पीर का बड़ा मानने वाला था और अपने वज़ीर को कहता रहता था कि मेरे पीर से मिलो। वज़ीर चूंकि इस पीर की हकीकत को जानता था इसलिए टलाता रहता था। अंत एक दिन जब बादशाह पीर के पास गया तो वज़ीर को भी साथ लेता गया। पीर साहिब ने बादशाह से मुखातिब होकर कहा कि बादशाह सलामत ! धर्म की सेवा बड़ी अच्छी बात है। सिकंदर बादशाह ने इस्लाम धर्म की सेवा की और वह अब तक मशहूर चला आता है।(यह मैं पहले भी एक बार किसी और संदर्भ में बयान कर चुका हूँ।) यह सुनकर वज़ीर ने कहा कि देखिए हुज़ूर ! पीर साहब को विलायत के साथ तारीख़ का भी बहुत ज्ञान है। सिकंदर तो इस्लाम से पहले गुज़रा है। उसके बारे में पीर साहिब बातें कर रहे हैं यानी आप के यह पीर साहिब वली अल्लाह ही नहीं बल्कि यह तो बड़े इतिहास कार भी लगते हैं। उन्होंने नया इतिहास बना दिया है। इस पर बादशाह को पीर से नफरत हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह किस्सा सुना कर फरमाया करते थे कि मज्लिस का ज्ञान भी महत्त्वपूर्ण है। जब तक आदमी इससे परिचित नहीं हो दूसरों की नज़रों में तुच्छ हो जाता है। इसी तरह मज्लिस के आदाब (शिष्टाचार) का ख्याल रखना भी ज़रूरी है। जैसे एक मज्लिस मश्वरे की हो रही हो और कोई बड़ा आलिम हो, मगर इसमें जाकर सब के सामने लेट जाए तो कोई उस के ज्ञान की परवा नहीं करेगा और उसके बारे में लोगों पर बुरा असर पड़ेगा। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि जो भी मज्लिस हो, जिस किस्म की मज्लिस हो मुब्बलिग़ को, मुरब्बी को, इसका ज्ञान होना ज़रूरी है। प्रत्येक मुब्बलिग़ को चाहिए कि वह भूगोल, तारीख़, हिसाब, चिकित्सा, बातचीत के आदाब, मज्लिस के शिष्टाचार आदि के बारे में इतना ज्ञान तो ज़रूर रखता हो जितनी शरीफों की मज्लिस में शामिल होने के लिए ज़रूरी है और

यह कोई मुश्किल काम नहीं है। थोड़ी सी मेहनत से यह बात हासिल हो सकती है। इसके लिए हर ज्ञान की प्रारंभिक किताबें पढ़ लेनी चाहिए।

(उद्धरित हिदायाते ज़र्रीं अन्वारुल उलूम भाग 5 पृष्ठ 584-585)

इसके अलावा भी आजकल हमारे मुरब्बियान से इस ज़माने के हालात के अनुसार मौजूदा मामलों के बारे में सवाल किए जाते हैं। और कई बार क्योंकि अख़बार आदि रोज़ाना नहीं पढ़ते, ज्ञान नहीं होता या ख़बरें नहीं सुनते, ज्ञान नहीं होता या किसी बारे में एक मामले की गहराई में नहीं गए होते। इसलिए कई बार जो दुनियादार लोग हैं वे फिर बुरा असर भी ले लेते हैं। कई जगह से ऐसी शिकायतें आती भी हैं इसलिए मौजूदा हालात से परिचय और जिस मज्लिस में जाएं उस का ज़रूरी परिचय हासिल करके जाना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक उदाहरण वर्णन की है। फरमाते थे किसी आदमी के दो बेटे थे। उसने अपना माल उन में बाँट दिया। छोटा बेटा अपना सारा माल लेकर दूर दराज़ चला गया और वहां उसने सारा माल बुरी आदत में बर्बाद कर दिया। आख़िर में वह एक आदमी के यहां चरवाहे के रूप में काम करने लगा। (सब कुछ लुट गया। अख़िर मज़दूरी करनी पड़ी।) इस हालत में उसने सोचा कि मेरे बाप के कितने ही मज़दूरों को रोटी बड़ी खुली मिलती है। बहुत मिलती है। मगर मैं यहां मज़दूरी करने के बावजूद भूखा मर रहा हूँ। क्यों न उसके पास जाकर यह न कहूं कि मुझे भी अपने मज़दूरों की तरह रख ले। इस पर वह अपने बाप के पास गया। बाप उसे देखकर बहुत ख़ुश हुआ और उसे गले लगा लिया और नौकरों से कहा ख़ूब मोटा ताज़ा बछड़ा लाकर ज़िब्ह करो ताकि हम खाएं और ख़ुशी मनाएं। जब उसका दूसरा बेटा आया (उस को भी धन दौलत दिया था और वह अपना कारोबार बड़ा अच्छा कर रहा था) तो उसे यह बात बहुत बुरी लगी (कि सब कुछ लुटा कर आ गया है उस की इतनी ख़ातिर दारी हो रही है) और इस ने आपने बाप को कहा कि मैं इतने बरस से तुम्हारी सेवा कर रहा हूं और कभी तुम्हारा आदेश नहीं तोड़ा मगर तुमने कभी एक बकरी का बच्चा भी मुझे नहीं दिया कि अपने दोस्तों के साथ ख़ुशी कर लो। लेकिन जब तुम्हारा बेटा आया है जिस ने तुम्हारा माल ऐश आराम में बर्बाद कर दिया उस के लिए तूने पला हुआ बछड़ा ज़िब्ह करवा दिया। बाप ने कहा, तू हमेशा मेरे पास है और मेरा जो कुछ है वह तेरा ही है लेकिन तेरे इस भाई के आने पर इसलिए ख़ुशी मनाई गई कि यह मुर्दा था अब ज़िन्दा हुआ है। खोया हुआ था, अब मिल गया है। इसलिए जो आदमी किसी ग़लती को करता है जब वह ग़लती के बाद अल्लाह तआला के हुज़ूर उसके आगे झुकता है और अपने गुनाह को स्वीकार करता है और स्वीकार करते हुए अफसोस व्यक्त करता है तो निश्चित रूप से अल्लाह तआला उसकी तौबा कुबूल करता और पहले से कहीं अधिक उस पर रहम करता है।"

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 12 पृष्ठ 375)

तो एक मोमिन को भी अल्लाह तआला की विशेषताओं को अपनाते हुए जहां वह यह इच्छा रखता है कि अल्लाह तआला मुझ से यह व्यवहार करे तो उन विशेषताओं को अपनाते हुए जहां भी देखें कि जो अपने भाई हैं उन्होंने जिन्होंने कुसूर किए हैं, और अगर वह सच्चे दिल से माफी मांगने आते हैं अपराधों को स्वीकार करते हैं तो उन्हें माफ करना चाहिए इसके साथ ही उनके लिए दुआ भी करनी चाहिए। जो माफी नहीं भी मांग रहे कि अल्लाह तआला उनकी भी और हमारी भी ग़लतियों को माफ करे और हमें माफ करे। इंसान का किरदार हर हालत में मज़बूत होना चाहिए यह नहीं कि कभी इधर हो गए और कभी उधर हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि एक बादशाह ने एक बार बैंगन खाए तो उसे बहुत मज़ा आया। (कई लोगों ने किस्सा सुना हुआ है।) वह जब दरबार में आया तो कहने लगा कि बैंगन क्या ही अच्छी बात है। इसका एक वज़ीर था। उस ने भी बैंगन की तारीफ शुरू कर दी और कहा कि इस शक्ल ही देखिए कहने लगा कैसी अच्छी शक्ल है। सिर तो ऐसा जैसे किसी पीर ने हरी पगड़ी बांधी हुई हो। नीले रंग का पोशाक आकाश के रंग को मात दे रहा है। पौधों के साथ लटका हुआ ऐसा लगता है जैसे कोई राजकुमार पालने से झूल रहा हो। (ऐसी ऐसी प्रशंसा कीं।) चिकित्सा के रूप में जितनी उसकी खूबियां थीं सारी गिन-गिन के बयान कर दीं। ये बातें सुनकर बादशाह को शौक पैदा हुआ और उसने कुछ दिन बैंगन ही खाना शुरू कर दिए क्योंकि बैंगन गर्म होते हैं इसलिए उन्होंने गर्मी पैदा की (और वह) बीमार हो गया। तो बादशाह ने एक दिन कहा बैंगन बहुत बुरी चीज़ है। इस पर इसी वज़ीर ने उसके दोष कहने शुरू कर दिए। कहने लगा रूप देखिए कितना काला मुंह है। नीले पैर हैं और इस से भी अधिक और क्या बुराई हो सकती है कि उलटा लटका हुआ है जैसे किसी ने फांसी पर लटकाया हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि चूंकि हर चीज़ की खूबियां भी होती हैं, कमियां भी होती हैं, बुराईयां भी होती हैं तो इस अवसर पर वज़ीर ने उसकी सभी बुराइयां जो चिकित्सकीय थीं वह भी बयान कर दीं। पास बैठने वालों में से एक ने कहा कि यह क्या है। उसने कहा कल इस वक्त तुम गुण गा रहे थे आज उसके दोष वर्णन कर रहे हो। कम से कम सच तो बोला करो तो कहने लगा कि मैं बादशाह का नौकर हूँ बैंगन का नहीं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 10 पृष्ठ 77-78)

आजकल की मुस्लिम दुनिया में आमतौर पर यही कुछ देखते हैं और उन्हें देखकर हमें फिर सबक सीखना चाहिए। चरित्र के आधार पर किरदार के मामले में सबसे मज़बूत चरित्र तो मुसलमान का होना चाहिए लेकिन दुर्भाग्य से अधिकांश किरदार के संदर्भ में गिरे हुए यही लोग हैं। सच्चाई पर होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता यह तो ख़ुशामदी और जहां हित देखते हैं उसी तरफ पलट जाते हैं। चाहे वह लीडर हों या चाहे आम जनता हूँ। सच्चाई पर क़ायम होने की मांग तो यह है कि सही और ग़लत को सामने रखकर फिर अपनी राय कायम की जाए और सही सलाह दी है।

फिर यह भी एक और घटना है। इस को वर्णन करता हूँ। इसका संबंध अल्लाह तआला के साथ संबंध से है। अल्लाह तआला के सम्बन्ध ही वास्तव में समस्याओं का समाधान है और यह संबंध तक़वा से बढ़ता है और फिर हम अहमदी जिनका यह दावा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हम ने सही इस्लामी शिक्षा के अनुसार जीवन गुज़ारना है तो हमें ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हर हाल में अल्लाह तआला की तरफ ही देखना है, उसी से संबंध स्थापित करना है। हमारी सफलता कभी सांसारिक बातों से नहीं हो सकती। अत: अगर हम में तक्वा और अल्लाह तआला का डर हो, अगर हम तक्वा और अल्लाह तआला का डर अपने अंदर पैदा करें तो फिर ही हमारी कामयाबियां हैं और जब यह मामला होगा तो फरिशते हमारी राह साफ करते चले जाएंगे। इंशा अल्लाह।

तो हम में से हर एक को यह सोचने की ज़रूरत है कि हम ने तक्वा पैदा करने की कोशिश करनी है और ख़ुदा तआला से संबंध बनाना है। बहुत सारे मामलों में हम देखते हैं कि जब एक दुनियादार का दुनियादार से सम्बन्ध उसे फायदा पहुँचा सकता है। तो ख़ुदा तआला का संबंध तो इस से हज़ारों गुना बढ़कर लाभ पहुंचाने वाला है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक किस्सा बयान किया करते थे कि एक आदमी एक सफर पर जाने लगा तो उसने अपना कुछ रुपया क़ाज़ी के पास अमानत के रूप में रखवाया। ज़माने के बाद वापस आकर उसने जब रुपया मांगा तो क़ाज़ी की नीयत बदल गई और उसने कहा मियां अक्ल की दवा करो कौन सा रुपया और कैसी अमानत। मेरे पास तुम ने कब रुपया रखवाया था। उसने कोई तहरीर आदि तो ली नहीं थी क्योंकि वह समझता था कि क़ाज़ी साहब की ज़ात ही काफी है मगर क़ाज़ी साहिब ने कहा कि अगर कोई रुपया रख गए थे तो लाओ सबूत पेश करो। कोई रसीद दिखाओ। कोई गवाह लाओ। उसने बहुत याद दिलाया मगर वह यही कहता रहा कि कुछ नहीं है। तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है तुम ने कभी पैसा नहीं दिया। आख़िर में उस ने बादशाह के पास शिकायत की। बादशाह ने कहा कि अदालत के तौर पर मैं तुम्हें तुम्हारे हक में कुछ नहीं कर सकता। तुम्हारे ख़िलाफ फैसला करने पर मजबूर हूँ क्योंकि कोई तहरीर नहीं है। गवाह नहीं है। सबूत नहीं है। हाँ एक तरकीब बता देता हूँ। तुम अगर सच्चे हो तो इस से लाभ उठा सकते हो। अमुक दिन मेरा जुलूस निकलेगा और क़ाज़ी भी अपनी डयूड़ी के आगे मौजूद रहेगा। उस दिन बादशाह सड़कों पर शहर में दौरा करेगा। तुम भी कहीं उसके पास खड़े हो जाना। मैं तुम्हारे पास पहुंच कर अपने साथ निसंकोच रूप से बात शुरू करूंगा कि तुम मुझे मिलने क्यों नहीं आए और इतने समय से मुलाकात नहीं हुई और तुम मुझे यह कहना कि कुछ परेशानियां सी थीं। इसलिए हाज़िर नहीं हो सका। इस आदमी ने ऐसा ही किया और जुलूस के दिन क़ाज़ी साहिब के पास जाकर खड़ा हो गया। बादशाह आया तो बादशाह ने क़ाज़ी के बजाय आदमी से मुख़ातिब होकर बात शुरू कर दी और कहा तुम चले गए, ज़माने से मुलाकात नहीं हुई और उसने अपने सफर का हाल बताया तो बादशाह ने पूछा वापसी पर क्यों नहीं आए। उसने कहा कि यूं ही कुछ परेशानियां थीं, कुछ वसूलियाँ आदि करनी थीं। बादशाह ने उसे कहा नहीं नहीं, तुम्हें निश्चित रूप से हमें मिलना चाहिए था। जल्दी-जल्दी मुझे मिलने आया करो। जब बादशाह का जुलूस गुज़र गया तो क़ाज़ी साहिब ने उसी आदमी से कि मियां ज़रा बात तो सुनो। तुम उस दिन आए थे और किसी अमानत का उल्लेख

कर रहे थे। मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ याददाश्त काम नहीं करती। कुछ अता-पता बताओ तो मुझे याद आए। उसने फिर वही बातें दोहरा दीं जो पहले क़ाज़ी से कर चुका था। इस पर क़ाज़ी साहिब कहने लगे अच्छा- अच्छा अमुक प्रकार की थैली थी, वह तुम्हारी थी। वह तो पड़ी हुई है। ले जाओ आकर और लाकर रुपया उसे दे दिया। यह किस्सा सुना कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि दुनिया के विरोध से किया डरना कोई बड़े से बड़ा जरनैल भी तो तलवार और गोलियों आदि से ही नुकसान पहुंचा सकता है मगर ये सारी बातें हमारे ख़ुदा तआला की हैं। अगर वह कहे कि उस तरफ वार न करो तो कौन कर सकता है। तो ग़ुलाम को अल्लाह तआला से दोस्ती करनी चाहिए। उस से मुहब्बत करनी चाहिए, डर से या मरने मारने से काम नहीं बनता। तरक्की का यही रास्ता है कि आदमी अपने आप को ख़ुदा के हाथ में दे दे और जिस तरफ वह ले जाना चाहे इस ओर चलता जाए।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 274-275)

एक सच्चे मोमिन का उदाहरण क्या है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे मोमिन का उदाहरण सच्चे दोस्त से देते थे। आप सुनाया करते थे कि कोई अमीर आदमी था। उसके लड़के के कुछ आवारा लड़के दोस्त थे। आवारा लड़के दोस्त थे। बाप ने उसे समझाया कि ये लोग तेरे सच्चे दोस्त नहीं हैं केवल लालच की वजह से तुम्हारे पास आते हैं वरना उन में से कोई भी तुम्हारा वफादार नहीं है मगर लड़के ने अपने बाप से कहा कि लगता है कि आप को कोई सच्चा दोस्त शायद मिला नहीं। इसलिए आप सभी लोगों के बारे में यही विचार रखते हैं। मेरे दोस्त ऐसे नहीं हैं। वह बहुत विश्वास योग्य हैं और मेरे लिए जान कुर्बान करने को तैयार हैं। बाप ने फिर समझाया कि सच्चे दोस्त का मिलना बहुत मुश्किल है। बाप ने कहा कि सारी उम्र में मुझे एक ही सच्चा दोस्त मिला है लेकिन वह लड़का अपनी ज़िद पर क़ायम रहा। कुछ समय के बाद उस ने घर से खर्च के लिए कुछ रकम मांगी तो बाप ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारा खर्च उठा नहीं कर सकता। तुम अपने दोस्तों से मांगो। मेरे पास इस समय कुछ नहीं है। दरअसल उसका बाप उसके लिए मौका पैदा करना चाहता था कि वह अपने दोस्तों की परीक्षा ले। जब बाप ने घर से जवाब दे दिया और सभी दोस्तों को मालूम हो गया कि उसे घर से जवाब मिल गया है तो उन्होंने उसके पास आना जाना बंद कर दिया और मेल मुलाकात छोड़ दिया आख़िर तंग आकर ख़ुद ही यह लड़का उन दोस्तों को मिलने के लिए उनके घरों पर गया। जिस दोस्त के दरवाज़े पर दस्तक देता वह अंदर से ही कहला भेजा कि वह घर में नहीं है। कहीं बाहर गए हुए हैं या वह बीमार है। इस वक्त नहीं मिल सकता। सारा दिन उसने चक्कर लगाया मगर कोई दोस्त मिलने के लिए बाहर न आया। आख़िर शाम को घर लौटा। बाप ने पूछा बताओ दोस्तों ने किया मदद की। कहने लगा सारे ही हरामखोर हैं। किसी ने कोई बहाना बना लिया है और किसी ने कोई। बाप ने कहा मैं ने तुम्हें नहीं कहा था कि ये लोग विश्वास योग्य नहीं। अच्छा हुआ तुम को भी अनुभव हो गया। अब आओ मैं तुम्हें अपने दोस्त से मिलाओं। वह पास ही एक जगह गया। उसका एक दोस्त जो सिपाही था। किसी चौकी में काम करता था। यह बाप बेटा उसके मकान पर पहुंचे और दरवाज़े पर दस्तक दी। अंदर से आवाज़ आई कि मैं आता हूँ। काफी देर हो गई। दरवाज़ा खोलने के लिए कोई न आया। लड़के के दिल में अलग-अलग विचार पैदा शुरू हुए। उसने बाप से कहा अब्बा जी मालूम होता है कि आपका दोस्त भी मेरे दोस्तों जैसा ही है। बाप ने कहा देख, कुछ देर रुको। आख़िर कुछ वक्त बीत गया। उस ने दरवाज़ा खोला तो बाहर आया तो गले में तलवार लटकाई हुई थी। एक हाथ में एक थैली उठाई हुई थी। दूसरे हाथ से बीवी का हाथ पकड़ा हुआ था। दरवाज़ा खोलते ही उसने कहा कि माफ फरमाइए आप को बहुत तकलीफ हुई। जल्दी नहीं आ सका। मेरे जल्दी न आने की वजह यह हुई कि आप ने जब दरवाज़े पर दस्तक दी तो मैं समझ गया कि आज कोई खास बात है कि आप ख़ुद आए हैं वरना आप किसी नौकर को भी भिजवा सकते थे। मैंने दरवाज़ा खोलना चाहा तो मुझे अचानक ख़्याल आया कि हो सकता है कोई मुसीबत आई हो। यह तीन चीज़े मेरे पास थीं। एक तलवार और एक थैली जिस में मेरा एक साल का जमा किया हुआ माल है, कुछ सौ रुपए हैं और मेरी बीवी सेवा के लिए आई है कि शायद आप के घर में कोई तकलीफ हो और यह जो देरी हुई है इसलिए हुई कि माल ज़मीन में दबाया हुआ था, इसे निकालने में देर लग गई। तो मैंने माना कि संभव है कोई ऐसी मुसीबत हो जिस में कोई बहादुर काम आ सकता है इसलिए मैंने तलवार ले ली कि अगर जान की ज़रूरत हो तो मैं जान कुरबान कर सकूं। फिर मैंने सोचा कि यद्यपि आप अमीर आदमी हैं लेकिन हो सकता है कोई मुसीबत ऐसी आई हो जो आप का पैसा बर्बाद हो गया हो और रुपए से आपकी मदद कर सकूं तो मैंने यह थैली साथ ले ली है और फिर मैं ख़्याल क्या कि बीमारी आदि आदमी के साथ लगी हुई है, हो सकता है आपके घर में कोई परेशानी हो तो मैंने बीवी को भी साथ ले लिया ताकि वे सेवा कर सके। उस अमीर आदमी ने कहा कि मेरे दोस्त मुझे इस वक्त किसी मदद की ज़रूरत नहीं है और कोई मुसीबत इस समय मुझे नहीं आई बल्कि मैं सिर्फ अपने बेटे को सबक सिखाने के लिए आया हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि यह सच्ची दोस्ती है और इस से बढ़कर सच्ची दोस्ती इंसान को अल्लाह तआला से कायम करनी चाहिए कि वह अपनी जान और माल और अपना सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार रहे जिस तरह दोस्त कभी मानते हैं और कभी मनवाते हैं। उसी तरह आदमी का कर्तव्य है कि वह ईमानदारी के साथ और खुले दिल के साथ अल्लाह तआला की राह में कुरबानी करता चला जाए। अल्लाह तआला हमारी कितनी बातें मानता है। रात दिन हम इस की दी गई नेअमतों से फयादा उठाते हैं। उसने जो चीज़ें हमारी राहत और आराम के लिए बनाई हैं हम उन्हें इस्तेमाल करते हैं। आख़िर किस हक के अधीन हम इतनी चीज़ों का लाभ उठाते हैं। ख़ुदा तआला हमारी कितनी ख्वाहिशों को पूरा करता है और अगर कोई एकाध बार अपनी इच्छा के ख़िलाफ हो तो कैसे लोग अल्लाह तआला पर शंकित हो जाते हैं। असल संबंध यह है कि ख़ुशी हो या तकलीफ हो दोनों हालतों में मज़बूत रहे और इसमें कोई अंतर न आए।

(उद्धरित अब काम और सिर्फ काम करने का वक्त है, अन्वारूल उलूम भाग 18 पृष्ठ 382-384)

इसलिए वे लोग जो नमाज़ों के हक़ अदा नहीं करते। उन्हें अपनी समीक्षा करनी चाहिए। जो लोग धर्म को दुनिया पर प्रथम करने के अहद(वादा) को पूरा नहीं करते उन्हें अपनी समीक्षा करनी चाहिए। जो लोग यहाँ आए तो अहमदियत के कारण हैं लेकिन यहां आकर भूल गए हैं कि अहमदियत की वजह से ही उन्हें यहां रहने की नागरिकता का अधिकार मिला है और इसलिए उन्हें अधिक से अधिक जमाअत की सेवा के लिए आगे आना चाहिए लेकिन वे यह भूल जाते हैं और कई बार आपत्ति शुरू कर देते हैं। ऐसे लोग न अच्छे आबिद हैं न वफादार हैं। वफ़ा तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुशी और ग़मी तंगी और खुशहाली दोनों हालतें ऐसी होनी चाहिए। जिस के उच्च स्तर कायम हूं। अल्लाह तआला के लिए हर समय उसके दर पर रहकर कुरबानी के लिए अपने आप को तैयार रखना चाहिए।

इस दोस्ती का हक अदा करने वाले आदमियों की घटना जो अभी मैंने सुनाई है वह नबियों और अल्लाह तआला के बन्दों पर कैसे पूरी होती है। इस को भी हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बड़े सुंदर रंग में बड़े दिलचस्प शब्दों में प्रस्तुत फरमाया कि जहां मुहब्बत होती है वहां दलील नहीं पूछी जातीं। वहां इंसान पहले आज्ञाकारिता की घोषणा करता है फिर यह सोचता है कि मैं इस आदेश पर कैसे अनुकरण करूं। यही हालत नबियों की होती है। जब अल्लाह का पहला कलाम उतरता है तो अल्लाह तआला की मुहब्बत उनके दिल में इतनी होती है कि वह दलील नहीं मांगते तो और जब ख़ुदा तआला की आवाज़ उनके कानों तक पहुंचती है तो वह यह नहीं कहते कि हे हमारे रब्ब ! क्या तो हम से हँसी कर रहा है। कहाँ हम और कहाँ यह काम? बल्कि वे कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! बहुत अच्छा और यह कहकर काम के लिए खड़े हो जाते हैं और इस के बाद सोचते हैं कि अब इन्हें क्या करना चाहिए। यही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस रात किया। ख़ुदा ने कहा उठो और दुनिया की हिदायत के लिए खड़े हो और वह तुरंत उठ खड़े हुए और फिर यह सोचने लगे कि अब मैं यह काम कैसे करूंगा। तो आज से पचास साल पहले(जब आपने 50 साल कहा था और आज इस बात को लगभग 125 साल हो गए हैं बल्कि आज से 126-27 साल) कहते हैं कि आज से 50 साल पहले की वह ऐतिहासिक रात जो दुनिया के अगले इंकलाब के लिए जबरदस्त रणनीति साबित होने वाली है जो अगली बनने वाली नई दुनिया के लिए प्रारंभिक रात और प्रारंभिक दिन करार दी जाने वाली है अगर हम इस रात का नज़ारा सोचें तो निश्चित रूप से हमारे दिल इस ख़ुशी को बिल्कुल और निगाह से देखें। हम में से कितने हैं जो यह सोचते हैं कि यह ख़ुशी उन्हें किस घड़ी के नतीजे में मिली है यानी वे लोग जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आए। उन्हें यह आनंद किस काम के नतीजा में हासिल हुआ और कैसे रात के बाद उन पर सफलता व कामरानी का यह दिन चढ़ा। कई लोग मसीह मौऊद का इंतज़ार करते-करते मर गए लेकिन वे जिन्होंने माना वे यह सोचते हैं इस तरह सोचते हैं यह ख़ुशी और प्रसन्नता और सफलता व कामरानी का दिन उन्हें इस घड़ी

और रात के परिणाम में मिला जिस में एक अकेला बन्दा जो दुनिया की नज़रों में तुच्छ और सभी सांसारिक सामानों से वंचित था, उसे ख़ुदा तआला ने कहा कि उठ और दुनिया की हिदायत के लिए खड़ा हो और उसने कहा, हे मेरे रब्ब! मैं खड़ा हो गया। यह वह वफादारी थी, यह वह मुहब्बत का सही नज़ारा था, जिसे ख़ुदा ने कुबूल किया और उसने उनकी रहमत और दया से उसे सम्मानित किया। रोना और हंसना दोनों ही अल्लाह की शान से दूर हैं। अल्लाह तआला न रोता है न हँसता है लेकिन प्यार की बातचीत में और प्यार के कलामों में ये बातें आ ही जाती हैं जिस तरह हदीस में भी आता है कि जब एक सहाबी ने मेहमानी की तो अल्लाह तआला उनकी बातों पर ख़ुश हुआ और हंसा। (बुख़ारी किताब मनाकिबुल अन्सार हदीस नम्बर 3798) बहरहाल कहते हैं कि इसलिए मैं कहता हूं कि अगर ख़ुदा के लिए भी रोना संभव होता अगर ख़ुदा के लिए भी हंसी संभव होती तो जब ख़ुदा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं तुझे दुनिया के सुधार के लिए खड़ा करता हूँ और आप तुरंत खड़े हो गए और आपने यह सोचा तक नहीं कि यह काम मुझ से कैसे होगा। अगर उस समय ख़ुदा के लिए रोना संभव होता तो मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि ख़ुदा रो पड़ता और अगर ख़ुदा के लिए हंसी संभव होती तो वह निश्चित रूप से हँस पड़ता। वह हंसता ज़ाहिरी तौर पर इस मूर्खता के दावे पर जो दुनिया की तुलना में एक दुर्बल और कमज़ोर वजूद ने किया और वह रो पड़ता उसके मुहब्बत के जज़्बा पर जो इस अकेली रूह ने ख़ुदा के लिए प्रकट किया। यही सच्ची दोस्ती थी जो ख़ुदा तआला को मंज़ूर हुई और इसी रंग की सच्ची दोस्ती होती है जो दुनिया में भी काम आया करती है। फिर आप ने वह घटना वर्णन की दो दोस्तों की ग़रीब और अमीर का वर्णन किया। फिर कहा कि दुनिया की ज़बान में यह दोस्ती का बहुत ही शानदार उदाहरण है जो बयान पहले हो चुकी है और आदमी ऐसी भावनाओं को देखकर बिना इसके कि वह अपने मन में गंभीर रोमांच महसूस किए बिना नहीं रह सकता। मगर एसी दोस्ती का व्यक्त करना इस दोस्ती की तुलना में कुछ भी नहीं जो नबी अपने ख़ुदा के लिए प्रकट करते हैं। वहाँ क़दम-क़दम पर मुश्किलें होती हैं। वहाँ कदम कदम पर कुरबानी करनी पड़ती हैं और वहाँ कदम कदम पर मुश्किलें झेलनी पड़ता है। अत: नबियों का जवाब अपने ख़ुदा तआला को वैसा ही होता है बल्कि इससे भी बढ़कर जैसे इस ग़रीब आदमी ने अमीर आदमी को दिया था। बेशक अगर अक्ल की नज़र से देखें और तार्किक निगाह से इस पर विचार करें तो इस ग़रीब आदमी की यह हरकत हँसी के लायक नज़र आती है क्योंकि अमीर के हज़ारों नौकर थे। उनके होते हुए उसकी बीवी ने किया अधिक सेवा कर लेनी थी। इसी तरह वे लाखों का मालिक था उसे सौ डेढ़ सौ रुपए की थैली क्या फायदा पहुंचा सकती थी और ख़ुद उस के कई पहरेदार और रक्षक थे उसको दोस्त की तलवार क्या लाभ पहुंचा सकती थी? मगर मुहब्बत के जोश में उसने यह नहीं सोचा कि मेरी तलवार क्या काम देगी। मेरा थोड़ा रुपया लाभ देगा और मेरी बीवी क्या सेवा करेगी उसने इतना सोचा कि जो कुछ मेरे पास है वह मुझे हाज़िर कर देना चाहिए। तो जिस वक्त मुहब्बत का अत्यधिक जोश उठता है अक्ल उस समय काम नहीं करती। मुहब्बत अक़्ल को परे फेंक देती है और मुहब्बत चिन्ता को परे फेंक देती है और फिर वह मुहब्बत सामने आ जाती है। जिस तरह चील जब मुर्गी के बच्चों पर हमला करती है तो मुर्गी बच्चों को जमा करके अपने पंखों के नीचे छुपा लेती है और कई बार तो मुहब्बत ऐसी ऐसी हरकतें करा देती है कि दुनिया उसे पागलपन की हरकत करार देती है, लेकिन हकीकत यह है वह जुनून दुनिया की सारी अक्लों से ज्यादा कीमती होता है और दुनिया की सारी अक्लें इस एक मजनूनाना हरकत पर कुर्बान किया जा सकता है क्योंकि मूल अक़्ल वही है जो मुहब्बत से पैदा होती है। यह याद रखने वाली बात है कि मूल बुद्धि वही है जो मुहब्बत से पैदा होती है। नबी को भी जब आवाज़ आती है कि ख़ुदा ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला ख़ुदा, ख़ुदा सम्मान और प्रताप को पैदा करने वाला ख़ुदा, बादशाहों को फकीर और फकीरों को बादशाह बनाने वाला ख़ुदा, हुकूमतों को क़ायम करने और हुकूमतों को मिटाने वाला ख़ुदा, दौलतों को देने वाला और दौलतों को लेने वाला ख़ुदा, रिज़क देने और जीविका छीनने वाला ख़ुदा, ज़मीन और आसमान के कण कण और ब्रह्मांड का मालिक ख़ुदा, एक कमज़ोर और दुर्बल आदमी को आवाज़ देता है। कि मैं सहायता का मोहताज हूँ, मेरी मदद करो तो वह कमज़ोर और दुर्बल बन्दा अक्ल से काम नहीं लेता। वह यह नहीं कहता कि हुज़ूर क्या कह रहे हैं क्या हुज़ूर सहायता के मुहताज हैं।? हे अल्लाह तू मदद का मोहताज है।? हुज़ूर तो ज़मीन और आसमान के बादशाह हैं। मैं कंगाल और ग़रीब कमज़ोर आपकी क्या मदद कर सकता हूँ। वह यह नहीं कहता बल्कि दुर्बल और कमज़ोर शरीर को लेकर खड़ा हो जाता है और कहता है कि मैं हाज़िर हूँ। मैं हाज़िर हूँ। कौन है जो इन भावनाओं की गहराई का मूल्यांकन कर सकता है, सिवाय इसके जिसे मुहब्बत की चाशनी (मिठास) से थोड़ा बहुत हिस्सा मिला हो।

आप फरमाते हैं कि जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है कि आज से पचास साल पहले (उस समय और आज से 126 साल पहले) इसी ख़ुदा ने यह आवाज़ बुलंद की और कादियान के एकांत में पड़े हुए एक आदमी से कहा कि मुझे मदद की ज़रूरत है मुझे दुनिया में अपमानित किया गया है मेरा दुनिया में कोई सम्मान नहीं है। मेरा दुनिया में कोई नाम लेने वाला नहीं है, मैं असहाय हूँ। हे मेरे बन्दे मेरी मदद कर। उसने यह नहीं सोचा कि यह कहने वाला कौन है और जिस ने संबोधित किया है और जिस से संबोधित किया है वह कौन है उस की अक़्ल ने यह नहीं कहा कि मुझे बुलाने वाले के पास सभी ताकते हैं, मैं भला उसकी क्या मदद कर सकता हूँ। उसकी मुहब्बत ने उसके दिल में आग लगा दी यानी ख़ुदा तआला की मुहब्बत ने जब ख़ुदा तआला का पैग़ाम मिला तो एक आग लगा दी और दीवाना वार बिना किसी बात के जोश में खड़ा हो गया और कहने लगा, मेरे रब्ब मैं हाजिर हूं। मेरे रब्ब मैं हाजिर हूं। मेरे रब्ब मैं बचाऊँगा धर्म को नष्ट होने से बचाऊँगा।

(उद्धरित अल्फज़ल 25 जनवरी 1940ई जिल्द 28 नम्बर 15 पृष्ठ 8-10)

इसलिए आज हम जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में फना आदमी को और अल्लाह तआला के संदेश को दुनिया में फैलाने का वादा करके खड़ा होने वाले आदमी को मानने का दावा करते हैं। आज हम जो अल्लाह तआला के प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की बैअत में आने का दावा करते हैं। अगर आज हम यह समझते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई है और इस्लाम ने अपने पुनर्जागरण के दौर में प्रवेश किया है और अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा यह दुनिया के हर कोने में पहुँचेगा। अगर हम ने आप से यह बैअत का वादा इसलिए किया है कि हम आप अलैहिस्सलाम के काम में आप के सहायक बनेंगे तो हमें भी अपनी सारी क्षमताओं के साथ जो भी हम में हैं, कम हैं या अधिक आप की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए आगे आना चाहिए। अपनी मुहब्बत का इज़हार ख़ुदा तआला से भी इस के रसूल से भी और उसके मसीह से भी करना चाहिए। अपनी हालतों में शुद्ध परिवर्तन पैदा करना चाहिए। अपनी वफाओं के स्तर ऊंचे करने चाहिए। इसी तरह हर कुरबानी के लिए तैयार रहना चाहिए जिस तरह वह ग़रीब दोस्त अपने अमीर दोस्त के लिए तैयार हुआ था। अल्लाह तआला हमें उसकी ताकत तौफीक अता फरमाए।

☆ ☆ ☆

शेष पृष्ठ 7 पर

जो आदमी बेकार रहता है वह कई तरह की गंदी आदतें सीख जाता है। जैसे तुम देखोगे कि एक बेकार आदमी निश्चित रूप से इस प्रकार का खेल खेलेगा जैसे ताश या शतरंज आदि और जब वह यह खेल खेलने बैठेगा तो चूंकि वह अकेला नहीं खेल सकता इसलिए वे आवश्यक है कि 2 / 4 लड़कों को अपने साथ मिलाना चाहेगा और फिर अपने क्षेत्र को और व्यापक करता चला जाएगा ... वह जाहिरी तौर पर एक आवारा होगा मगर दरअसल वह रोगी होगा, प्लेग का वह रोगी होगा, हैजा का जो न केवल ख़ुद मरेगा बल्कि हज़ारों और कीमती जानों को भी मार देगा। फिर इससे प्रभावित होने वाले संक्रामक रोगों की तरह और लोगों को प्रभावित करेंगे और वह औरों को यहाँ तक होते होते देश का बहुत बड़ा हिस्सा इस संकट में गिरफतार हो जाएगा।"

इसलिए बेकारी एक ऐसा रोग है कि यह जिस क्षेत्र में हो उसकी तबाही के लिए किसी और चीज की आवश्यकता नहीं। अत: बेकारों की सारी कोशिश ऐसे ही कामों के लिए होगी जो न उनके लिए उपयोगी है न ही सिलसिला के लिए और न मज़हब के लिए, तो आर्थिक दृष्टि से भी बेकारी एक अभिशाप है और जितना संभव हो सके इसको जल्द दूर करना चाहिए।

इसलिए आऐं अपने वक्त का सम्मान करें और बेकारी जिस में वक्त का बहुत बड़ा नुकसान है उसके ख़िलाफ जिहाद करें। अगर हम अपने काम वक्त पर शुरू कर के वक्त पर ख़त्म कर लें तो हम बहुत सुखी रहेंगे। हमारे बहुत से वक्त और ऊर्जा की बचत रहेगी। हमारा आत्मसम्मान बढ़ेगा और सबसे बढ़कर हम प्रत्येक क्षण अपने लक्ष्य के क़रीब होते जाएंगे और हमारा समाज जन्नत जैसा बन जाएगा।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
E -mail : badarqadian@gmail.com

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 31 March 2016 Issue No.4

MANAGER
NAWAB AHMAD
Tel. : (+91) 1872-224757
Manager : + 91-9417020616
e -mail : managerbadrqnd@gmail.com
SUBSCRIPTION ANNUAL : Rs. 300/

तारीख़ अहमदियत

सफ़र लाहौर 20 अगस्त सन 1904 ई.

हज़रत अक़दस ''मुक़द्दमा करमदीन" के कारण परिवार समेत गुरदासपुर में ठहरे हुए थे। 18 अगस्त 1904 ई. की. पेशी के बाद 5 सितम्बर की तारीख़ पड़ी। जमाअत के बार-बार आग्रह से मध्यावकाश से फायदा उठाकर आप 20 अगस्त को लाहौर तशरीफ ले गए। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब और हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब को भी बुलवा लिया ।

2 सितम्बर सन 1904 ई. को जुम्अ: की नमाज़ हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने पढ़ाई और ख़ुत्बा में सूर: कौसर ...की सार गर्भित तफसीर की कि जिसे सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। उसी सफ़र में हज़रत अक़दस की वह मशहूर तक़रीर सुनाई गयी थी जो ''लेक्चर लाहौर" के नाम से मशहूर है और जिसे हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने हज़ारों लोगों के सामने ''मन्डुवा मेलाराम" में पढ़कर सुनाया था ।

अल्लाह तआला जब किसी इन्सान को अपनी जनाब में क़ुबूल कर लेता है तो ज़मीन में उसकी क़ुबूलियत फैला दी जाती है। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब(र) लाहौर पहुँच गए तो उस अवसर पर अख़बार अल-बदर ने एक नोट लिखा कि :-

''हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब की शान में आमतौर पर दूसरे लोगों की ज़ुबान पर यह वाक्य जारी थे कि ''लो साहिब मिर्ज़े का ख़लीफ़ा आ गया।" इसकी असल हक़ीक़त का पता तो अल्लाह तआला को है लेकिन हमने इसलिए वर्णन कर दिया है कि जब अल्लाह तआला किसी को बुलन्दी देना चाहता है और उसे क़ुबूल करता है तो किस तरह लोगों की ज़ुबान पर उसका वर्णन जारी कर देता है।हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब के आने से लोगों को यह फ़ायदा ज़रूर हुआ कि उससे पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्शन और मुलाक़ात के लिए जो लोग डाँवाडोल इधर से उधर और उधर से इधर फिर रहे थे वे एकाग्रचित्त होकर आपके चारों तरफ़ बैठ गये और उस शमा-ए-नूरी की रोशनी में अपने मताए-दीन के बिखरे हुए मोती बटोरने लगे। यह अल्लाह तआला का फज़ल है जिसे चाहे देता है ।

ख़ामोश मुबाहसा

आपके आने की ख़बर सुनकर कुछ आर्य भी आपसे मिलने के लिए आये। जिनमें से एक वकील था। जिसने दावा किया था कि मौलवी साहिब को मैं कुछ ही मिनट में आवागमन के मसले पर बहस करके हरा दूँगा। जब वे लोग बैठ गये तो उनमें से एक ने कहा कि मौलवी साहिब ! यह वकील साहिब आपसे आवा-गमन के बारे में बातचीत करना चाहते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने अपनी जेब से दो रुपये निकाले और वकील के सामने रख दिए और कहा कि जनाब ! पहले इन दोनों रुपयों में से एक रुपया उठा लें। इसके बाद मैं आपसे बात करूँगा। वकील साहिब जो बहस के लिए आए थे यह देखकर ख़ामोश होकर बैठ गए और रुपयों को देखना शुरू किया। इसी खामोश की भाषा में मुबाहसा कर रहे हैं हम पास यूँ ही बैठे हैं। अगर कुछ बोलें तो हमें भी फ़ायदा हो ।

वकील ने कहा कि मैं तो मुश्किल में फंस गया हूँ। अगर इन रुपयों में से एक उठा लूँ तो यह सवाल करेंगे कि तुमने दोनों में से यह एक क्यों उठाया दूसरे को क्यों न उठाया। एक को दूसरे पर बिना किसी कारण के क्यों प्राथमिकता दी। इस एतराज़ के बाद आवागमन के समर्थन में मेरा यह एतराज़ झूठा हो जाएगा कि ख़ुदा ने एक को अमीर और एक को ग़रीब क्यों बनाया। यह मुझसे पूछेंगे कि तुम एक रुपया को उठा सकते हो और दूसरे को छोड़ सकते हो तो फिर ख़ुदा क्यों एक को बड़ा दूसरे छोटा नहीं कर सकता। यह कहकर वकील ने बहाना बनाना चाहा और कहा कि वह फिर किसी समय आयेंगे मगर यह वादा न पूरा होना था न हुआ।

(हयाते नूर)

☆ ☆ ☆

जमाअतों की रिपोर्टें

जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म

जमाअत अहमदिया पारोली मध्य प्रदेश में 17 जनवरी 2016 ई को आदरणीय इकराम ख़ान साहिब की अध्यक्षता में जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म का आयोजन किया गिया। तिलावत कुरआन करीम आदरणीय सिद्दीक़ मुहम्मद साहिब मुअल्लिम सिलसिला ने की। नज़्म आदरणीय इकराम साहिब ने पढ़ी। इस के बाद विनीत ने आं हज़ूर की इबादत के विषय पर तक़रीर की। इस जलसा में कई मुसलमान भी शामिल हुए। तक़रीर के बाद उनके सवालों के जवाब दिए गए। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

(हलीम ख़ान मुरब्बी सिलसिला एम पी)

जमाअत अहमदिया मुंगेर में 3 जनवरी 2016 ई को ज़ुहर की नमाज़ के बाद विनीत की अध्यक्षता में जलसा सीरतुन्नबी का आयोजन किया गिया। कुरआन मजीद की तिलावत ख़ाकसार ने की सय्यद अजमल ने एक नज़्म पढ़ी इसके बाद आदरणीय मुहम्मद हबीब साहिब मुअल्लिम सिलसिला मुंगेर ने और विनीत ने आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत पर तकरीर कीं। दुआ के साथ जलसा ख़त्म हुआ।

अल बेरुनी

अबु रेहान मुहम्मद बिन अहमद अल-बयरुनी यानि अबू रयहान, पिता का नाम अहमद अल-बरुनी) या अल बेरुनी (973-1048) एक फ़ारसी विद्वान लेखक, वैज्ञानिक, धर्मज्ञ तथा विचारक था। अल बेरुनी की रचनाएँ अरबी भाषा में हैं पर उसे अपनी मातृभाषा फ़ारसी के अलावा कम से कम तीन और भाषाओं का ज्ञान था - सीरियाई, संस्कृत, यूनानी। वो भारत और श्रीलंका की यात्रा पर 1017-20 के मध्य आया था। ग़ज़नी के महमूद के कई अभियानों में वो सुल्तान के साथ था। अलबरुनी को भारतीय इतिहास का पहला जानकार कहा जाता था।

जीवन: अब्बासी शासन के पतनोन्मुख दिनों में उसका जन्म ख्वारज़्म में सन् 973 में हुआ था। यह स्थान अब उज़्बेकिस्तान में है। उसने गणित और खगोल विज्ञान अबू नस्र मंसूर से सीखी। वे अवेसिन्ना के साथी थे। अफ़ग़ानिस्तान और दक्षिण एशिया की यात्रा पर वो महमूद गज़नवी के साथ उसके काफ़िले में गया। भारत में रहते हुए उसने भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया और 1030 में तारीख़-अल-हिन्द (भारत के दिन) नामक क़िताब लिखी। उसकी मृत्यु ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान (उस समय इसे अफ़गानिस्तान नहीं कहा जाता था बल्कि फ़ारस का हिस्सा कहते थे) में हुई।

रचनाएं: अलबरुनी ने 146 क़िताबें लिखीं - 35 खगोलशास्त्र पर, 23 ज्योतिषशास्त्र की, 15 गणित की, 16 साहित्यिक तथा अन्य कई विषयों पर। तारीख अल हिन्द, अल कानून अल-मसूद,कानून अल मसूदी अल हैयत अल नजूम

दर्शन :अल-बरुनी चिकित्सा विशेषज्ञ था और कई भाषाओं पर भी अच्छा अधिकार रखता था। इसके साथ ही वह एक मशहूर गणितज्ञ, भूगोलवेत्ता, कवि, रसायन वैज्ञानिक और दार्शनिक भी था। उन्होने ही धरती की त्रिज्या नापने का एक आसान फार्मूला पेश किया। बरुनी ने ये भी साबित किया कि प्रकाश का वेग ध्वनि के वेग से अधिक होती है।(साभार विकीपीडिया)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian,
Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India.